चौदह

विश्वास के मूलतत्व

Fundamentals of Faith

> और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है (इब्रा. 11:6)।

विश्वासी होने के कारण, हमारा विश्वास परमेश्वर द्वारा निर्मित नींव पर बना होता है और जो लोग उसे खोजते हैं, वह उनके साथ भिन्न तरह का व्यवहार करता है, उन लोगों के विपरीत जो उसे नहीं खोजते। जैसे ही हम उन दोनों चीज़ों पर *सच में* विश्वास करने लगते हैं, हम परमेश्वर को प्रसन्न करना आरम्भ कर देते हैं, क्योंकि हम उसी समय उसे खोजना आरम्भ कर देते हैं। परमेश्वर की खोज करने में आता है (1) उसकी इच्छा को जानना (2) उसकी आज्ञा का पालन करना, और (3) उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करना। ये तीनों हमारे दैनिक चलन के घटक होने चाहिए।

यह अध्याय यीशु के साथ हमारे चलन पर केन्द्रित है। दुर्भाग्य की बात है कि बहुतों ने विश्वास के विषय पर बल तो दिया है लेकिन भौतिक सम्पदा के क्षेत्र पर ही। इसका कारण है कि कुछ तो इस विषय पर पहुंचने ही से डरते हैं। लेकिन जिस तरह से एक व्यक्ति के नदी में डूब जाने पर हम उस नदी का पानी पीना बन्द नहीं कर देते हैं उसी तरह से हमें सन्तुलन बनाकर रखना है। बाइबल हमें बहुत से विषयों पर शिक्षा देती है और परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी बहुत सी प्रतिज्ञाओं में विश्वास को कार्यान्वित करें।

यीशु परमेश्वर पर विश्वास रखने वाले एक व्यक्ति के उदाहरण को रखता है, और वह आशा करता है कि उसके अनुयायी भी उसका अनुसरण करें। इसी तरह से शिष्य निर्माता सेवक परमेश्वर पर भरोसा रखने के उदाहरण को रखता है, और वह अपने शिष्यों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करना सिखाता है। यह

अनिवार्य रूप से महत्वपूर्ण है। न केवल बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है, बल्कि विश्वास के बिना अपनी प्रार्थनाओं के जवाब प्राप्त करना भी असंभव है (देखें मत्ती 21:22; याकू. 1:5-8)। पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से सिखाता है कि संदेह करनेवाले आशीषों से वंचित होते हैं– जिन्हें विश्वासी प्राप्त करते हैं। यीशु ने कहा, ''विश्वास करनेवाले के लिये सब कुछ हो सकता है'' (मर. 9:23)।

विश्वास की परिभाषा

Faith Defined

> विश्वास की बाइबल संबन्धी परिभाषा इब्रानियों 11:1 में पाई जाती है:
>
> अब विश्वास आशा की गई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।

इस परिभाषा से हम विश्वास की कई विशेषताओं को जानने पाते हैं। सर्वप्रथम, विश्वास करनेवाले में *आश्वासन* पाया जाता है जिसे आत्मविश्वास भी कहा जाता है। यह आशा से भिन्न है, क्योंकि विश्वास ''*आशा की गई* वस्तुओं का निश्चय (आश्वासन) है।'' आशा सदैव संदेह के लिए स्थान छोड़ती है। आशा हमेशा कहती है, ''*शायद ऐसा हो*'' उदाहरण के लिए ''मुझे *आशा* है कि आज वर्षा होगी जिससे मेरे बगीचे के पौधों को पानी मिलेगा।'' मैं चाहता हूं कि वर्षा हो, लेकिन मुझे निश्चय नहीं कि वह होगी भी या नहीं। दूसरी ओर विश्वास, सदैव ''आशा की गई चीज़ों के होने का निश्चय (आश्वासन)'' रखता है।

लोग जिसे *विश्वास* या *भरोसा* कहते हैं यह प्राय : बाइबल की परिभाषा के अनुसार सदैव विश्वास नहीं होता है। उदाहरण के लिए वे आकाश में घने बादलों को देखकर कह सकते हैं ''मुझे *विश्वास* है कि आज वर्षा होगी।'' तौभी, उन्हें इस बात का निश्चय नहीं होता कि वर्षा होगी। वे सोचते हैं कि वर्षा होने की अच्छी संभावना है इसलिए वर्षा होनी *चाहिए।* यह एक बाइबल आधारित विश्वास नहीं है। बाइबल के विश्वास में संदेह का कोई तत्व नहीं होता। यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अतिरिक्त और किसी परिणाम के लिए स्थान नहीं छोड़ता।

विश्वास अनदेखी चीज़ों का प्रमाण है

Faith is the Conviction of Things Not Seen

इब्रानियों 11:1 में पाई जानेवाली परिभाषा यह भी कहती है कि विश्वास ''अनदेखी चीज़ों की का प्रमाण'' है। अत: हम अपनी पांचों इन्द्रियों से किसी चीज़ को देखकर उसे प्राप्त कर सकते हैं, इसके लिए विश्वास की आवश्यकता नहीं है।

मान लीजिए कोई आपसे इसी समय कहे, ''कुछ कारण से मैं यह विस्तार में नहीं बता सकता, लेकिन मुझे विश्वास है कि आपके हाथों में एक पुस्तक है।'' बेशक, आपको लगेगा कि इस व्यक्ति में कुछ खराबी है। आप कहेंगे, ''तुम्हें इस बारे में *विश्वास* करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मेरे हाथों में वास्तव में एक पुस्तक है।''

विश्वास एक अदृश्य क्षेत्र है। उदाहरण के लिए, इन शब्दों को लिखते हुए, मुझे विश्वास है कि मेरे निकट एक स्वर्गदूत है। मुझे इसका निश्चय है। मैं इतना आश्वस्त कैसे हो सकता हूं? क्या मैंने स्वर्गदूत को देखा है? नहीं। क्या मैंने अपने निकट से किसी स्वर्गदूत को उड़ते हुए सुना या अनुभव किया है। नहीं। यदि मैंने एक स्वर्गदूत को देखा, सुना या अनुभव किया होता, तो मुझे इस पर विश्वास करने की ज़रूरत न होती कि मेरे निकट स्वर्गदूत है -मैं इसे *जानता।*

अत: स्वर्गदूत की उपस्थिति का निश्चय मुझे कौन देता है? मेरी निश्चयता की शाखा परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में है। भजन संहिता 34:7 में उसने प्रतिज्ञा की है, ''यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किये हुए उनको बचाता है।'' परमेश्वर के वचन के अतिरिक्त मेरे पास विश्वास करने का और कोई प्रमाण नहीं है। यही सच्चा बाइबल का विश्वास है- ''अनदेखी चीज़ों का प्रमाण।'' संसार के लोग प्राय: इस अभिव्यक्ति का प्रयोग करते है : विश्वास करना। लेकिन परमेश्वर के राज्य में इसका विपरीत सत्य है ''विश्वास से देखना।''

जब परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में से किसी एक पर हम विश्वास से कार्य करते हैं, तब हम प्राय: उन परिस्थितियों का सामना करते हैं जो हमें संदेह की ओर ले जाती हैं, या हम एक ऐसे समय से होकर जाते हैं जब ऐसा लगता है कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा नहीं कर रहा है क्योंकि हमारी परिस्थितियों में परिवर्तन नहीं हो रहा होता है। इन मामलों में हमें केवल विश्वास में बने रहकर, संदेह का सामना करने की ज़रूरत होती है, और अपने हृदयों में यह मानना होता है कि परमेश्वर सदैव अपने वचन को पूरा करता है। उसके लिए झूठ बोलना असंभव है (देखें तीतु. 1:2)।

हम विश्वास को कैसे प्राप्त करें?

How Do We Acquire Faith?

क्योंकि विश्वास केवल परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर आधारित होता है, बाइबल के विश्वास का एकमात्र स्रोत है-परमेश्वर का वचन। रोमियों 10:17 कहता है, *सो विश्वास सुनने से,* और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमि. 10:17, पर बल दिया गया है)। परमेश्वर का वचन उसकी इच्छा को प्रगट करता है। ऐसा केवल तब ही होता है जब हम परमेश्वर की इच्छा को जानते हैं कि हम उस पर विश्वास कर सकते हैं।

अत: यदि आप विश्वास रखना चाहते हैं तो आपको परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को सुनना (या पढ़ना) चाहिए। विश्वास इसके लिए प्रार्थना करने, इसके लिए उपवास रखने, और इसके आप में आने के लिए आप पर किसी के हाथों को रखने से नहीं आता है। यह केवल परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है, और एक बार इसे सुनने पर आपको इस पर विश्वास करने का निर्णय लेना चाहिए।

विश्वास को प्राप्त करने के अतिरिक्त, हमारा विश्वास मज़बूत भी हो सकता है। बाइबल विश्वास के विविध मानदण्डों के बारे में बताती है-छोटे विश्वास से पहाड़ को हिला देने वाले विश्वास तक। विश्वास पर कार्य करने और उसे तृप्त किये जाने से विश्वास मज़बूत होता है-मानव मांसपेशियों के समान। हमें अपने विश्वास को लगातार परमेश्वर के वचन पर मनन करते हुए तृप्त करना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन पर आधारित प्रत्येक चीज़ पर प्रतिक्रिया देने के साथ-साथ उस पर कार्य करते हुए उस पर अभ्यास करना चाहिए। इसमें परेशानियों और चिन्ताओं का सामना करने वाले समय भी आते हैं। परमेश्वर नहीं चाहता कि उसकी सन्तान किसी भी चीज़ की चिन्ता करे, बल्कि यह कि वे हर परिस्थिति में उस पर भरोसा करें (देखें मत्ती 6:25-34; फिलि. 4:6-8; 1पत. 5:7)। चिन्ता करने से इन्कार करना ही केवल अपने विश्वास पर कार्य करने का एकमात्र तरीका है।

जो कुछ परमेश्वर ने कहा यदि हम सच में उस पर विश्वास करें, तो हम उस पर वैसे ही कार्य करेंगे और बोलेंगे, मानो वह सत्य है। यदि आप यह विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, तो आप उस व्यक्ति के समान कार्य करेंगे और बोलेंगे जो इस पर विश्वास करता है। यदि आप यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि आप स्वस्थ बनें, तो आप इसके समान कार्य करेंगे और बोलेंगे। बाइबल उन लोगों के उदाहरणों से भरी हुई है, जिन्होंने बुरी परिस्थितियों के बीच में भी परमेश्वर पर अपने विश्वास में होकर कार्य किया और परिणाम के रूप में चमत्कारों को प्राप्त किया। हम इस अध्याय में इस पर और बाद के अध्याय में ईश्वरीय चंगाई पर विचार करेंगे (कुछ अन्य अच्छे उदाहरणों के लिये देखें 2 राजा 4:1-7; मर. 5:25-34; लूका 19:1-10; और प्रेरित. 14:7-10)।

हृदय का विश्वास

Faith is of the Heart

बाइबल का विश्वास हमारे मस्तिष्क में कार्य नहीं करता, बल्कि इसके विपरीत यह हमारे हृदयों अथवा मन में काम करता है। पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है'' (रोमि. 10:10 अ)। यीशु ने कहा,

> जो कोई इस पहाड़ से कहे कि, ''तू उखड़ जा और समुद्र में जा पड़ा'' और *अपने मन में सन्देह न करे,* वरन प्रतीति करे, कि जो

> मैं कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिये वही होगा (मर. 11:23, पर बल दिया गया है)।

आपके मस्तिष्क में संदेह का होना संभव है लेकिन अपने मन में विश्वास होने पर आप उसे प्राप्त करते हैं जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की होती है। वास्तव में, कई बार जब हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करने का प्रयास करते हैं, हमारे मन-मस्तिष्क हमारी भौतिक इन्द्रियों और शैतान के झूठ से प्रभावित होकर, संदेहों के साथ प्रहार करेंगे। उन समयों के दौरान हमें संदेहों के स्थान पर परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को रखना है और बिना डगमगाए विश्वास में बने रहना है।

सामान्य विश्वास की गलतियां
Common Faith Mistakes

कई बार जब हम परमेश्वर में विश्वास पर कार्य करने का प्रयास करते हैं, हम जो चाहते हैं उसे प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं क्योंकि हम परमेश्वर के वचन के अनुसार कार्य नहीं कर रहे होते हैं। सबसे सामान्य गलती जो हम करते हैं वह यह कि हम उस किसी चीज़ के लिए विश्वास करने का प्रयास करते हैं जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने हमारे लिए नहीं की होती है।

उदाहरण के लिए विवाहित दम्पत्तियों के लिए सन्तान प्राप्ति हेतु परमेश्वर के वचन में पाई जाने वाली प्रतिज्ञा पर भरोसा करना पवित्रशास्त्र के अनुसार है जिनका वे दावा कर सकते हैं। मैं उन विवाहित दम्पत्तियों को जानता हूं जिन्हें डॉक्टर ने बताया था कि उनके कभी बच्चे नहीं हो सकते। तौभी, उन्होंने नीचे दी गई दो प्रतिज्ञाओं का दावा करते हुए, परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने का चुनाव किया, आज वे स्वस्थ बच्चों के माता-पिता हैं।

> और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा, और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा। तेरे देश में न तो किसी का गर्भ गिरेगा और न कोई बांझ होगी; और तेरी आयु मैं पूरी करुंगा (निर्ग. 23:25-26)।

> तू सब देशों के लोगों से अधिक धन्य होगा; तेरे बीच में न पुरुष न स्त्री निर्वंश होगी, और तेरे पशुओं में भी ऐसा कोई न होगा (व्यवस्था. 7:14)।

इन प्रतिज्ञाओं से संतानहीन दंपत्तियों को प्रोत्साहित होना चाहिए। विशिष्ट रूप से लड़के या लड़की के होने पर विश्वास करना, दूसरी कहानी है। बाइबल में ऐसी कोई भी विशिष्ट प्रतिज्ञाएं नहीं है जो हमें यह बताती है कि हम अपनी भावी संतान के लिंग का चयन कर सकते हैं। अपने विश्वास के प्रभावी होने के लिए हमें पवित्रशास्त्र

की सीमाओं में ही रहना चाहिए। परमेश्वर ने हमसे जो प्रतिज्ञा की है, हम केवल उसके लिए ही उस पर भरोसा कर सकते हैं।

आइये परमेश्वर के वचन में दी गई एक प्रतिज्ञा पर विचार करें और तत्पश्चात् यह निधार्रित करें कि इस प्रतिज्ञा के आधार पर हम क्या विश्वास कर सकते हैं:

> क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे (1 थिस्स. 4:16)।

पवित्रशास्त्र के इस पद के आधार पर हम निश्चय ही यह भरोसा कर सकते हैं कि यीशु फिर से आनेवाला है।

तथापि, क्या हम यह विश्वास करते हुए प्रार्थना करें कि वह कल लौटेगा? नहीं क्योंकि यह पवित्रशास्त्र और इसके अलावा कोई और पवित्रशास्त्र हमें इसकी प्रतिज्ञा नहीं देता है। वास्तव में यीशु ने कहा कि उसकी वापसी के दिन और घड़ी (समय) के बारे में कोई नहीं जानता।

बेशक, हम यह *आशा* करते हुए प्रार्थना कर सकते हैं कि वह कल लौटेगा, लेकिन हमें इस बात की गारंटी नहीं होनी चाहिए कि ऐसा होगा। जब हम विश्वास में होकर प्रार्थना करते हैं तो हमें निश्चय होता है कि जो हम प्रार्थना कर रहे हैं वह होगा, क्योंकि हमारे पास इसके लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा होती है।

इसी पवित्रशास्त्र के पद के आधार पर, हम यह भरोसा कर सकते हैं कि उन विश्वासियों की देह जिनकी मृत्यु हो चुकी है, यीशु की वापसी पर पुनरुत्थित होंगी। लेकिन क्या हमें यह विश्वास हो सकता है कि हममें से जो मसीह की वापसी पर जीवित होंगे, 'मसीह में मृतकों' के समान ही उसी क्षण पुनरुत्थित देहों को प्राप्त करेंगे, या फिर संभवत: उनसे पहले? नहीं, क्योंकि पवित्रशास्त्र हमें इसके विपरीत कहता है : ''जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।'' वास्तव में अगला पद आगे कहता है, ''तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे'' (1 थिस्स. 4:17)। अत: इस बात की कोई संभावना नहीं है कि ''मसीह में मृतक'' यीशु की वापसी पर पहले पुनरुत्थित देह को प्राप्त नहीं करेंगे। क्योंकि परमेश्वर का वचन इसकी प्रतिज्ञा करता है।

यदि हम किसी चीज़ के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हैं, तो हमें निश्चित होना चाहिए कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम अपनी इच्छित चीज़ को प्राप्त करें। परमेश्वर की इच्छा को बाइबल में वर्णित उसकी प्रतिज्ञाओं की जांच करने पर सुरक्षित रूप से निर्धारित किया जा सकता है।

विश्वास स्वाभाविक क्षेत्र में भी उसी तरह से कार्य करता है। आपके लिए यह विश्वास करना मूर्खतापूर्ण होगा कि आप इस पर विश्वास करें कि कल मैं दोपहर

भोजन पर आपके यहां आऊंगा जब तक कि मैं इसकी पहले से ही आपसे प्रतिज्ञा न करूं।

प्रतिज्ञा के बिना विश्वास का कोई आधार नहीं होता-यह मूर्खतापूर्ण है। अत: परमेश्वर से कुछ मांगने से पूर्व, पहले स्वयं से यह प्रश्न करें-मैं जिस चीज़ की इच्छा रखता हूं बाइबल उसके बारे में क्या प्रतिज्ञा करती है? जब तक आपके पास प्रतिज्ञा न हो, आपके विश्वास का कोई आधार नहीं होता।

एक दूसरी सामान्य गलती
A Second Common Mistake

कई बार अधिकांश मसीही परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में से किसी एक पर अपने जीवन में पूरा होने के लिए उसकी आवश्यक मांगों को जो कि उस प्रतिज्ञा के साथ जुड़ी होती हैं; पूरा किये बिना भरोसा करने लगते हैं। उदाहरण के लिए, मैंने मसीहियों को भजन संहिता को उद्धृत कर यह कहते सुना है, ''बाइबल बताती है कि परमेश्वर मेरे हृदय की इच्छा को पूरा करेगा। मैं इस पर विश्वास कर रहा हूं।''

तथापि, बाइबल केवल इतना ही नहीं कहती कि वह हमारे हृदय की इच्छाओं को पूरा करेगा। वास्तव में यह ऐसा कहती है:

> कुकर्मियों के कारण मत कुढ़, कुटिल काम करने वालों के विषय में डाह न कर। क्योंकि वे घास की नाईं झट कट जाएंगे, और हरी घास की नाई मुर्झा जाएंगे। यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर, देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह। यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा। अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़ और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा (भजन. 37:1-5)।

यदि हम यह विश्वास करें कि परमेश्वर हमारे मनोरथों को पूरा करेगा तो उसके साथ कई अनिवार्यताएं भी जुड़ी हैं। वास्तव में, मैंने उपरोक्त पद में आठ अनिवार्यताओं को गिना है। अनिवार्यता को पूरा किये बिना, हमें प्रतिज्ञात् आशीष को प्राप्त करने का कोई अधिकार नहीं है। हमारे विश्वास का कोई आधार नहीं है।

मसीही फिलिप्पियों 4:19 में पाई जाने वाली प्रतिज्ञा को भी उद्धृत करना पसंद करते हैं : ''और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरा करेगा।'' क्या इस प्रतिज्ञा में अनिवार्यताएं हैं? जी हां।

यदि आप फिलिप्पयों 4:19 में पाए जाने वाले संदर्भ की जांच करें तो आप पाएंगे कि यह प्रतिज्ञा सभी मसीहियों को नहीं दी गई है। इसके विपरीत, इस प्रतिज्ञा को

उन मसीहियों को दिया गया है जो स्वयं को देने वाले होते हैं। पौलुस जानता था कि परमेश्वर सभी फिलिप्पियों की आवश्यकताओं को पूरा करेगा क्योंकि उन्होंने हाल ही में उसे भेंट भेजी थी। क्योंकि वे यीशु की आज्ञानुसार सबसे पहले परमेश्वर के राज्य की खोज कर रहे थे, कि यीशु की प्रतिज्ञानुसार परमेश्वर उनकी सारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा (देखें मत्ती 6:33)। बाइबल में हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु परमेश्वर की अधिकांश प्रतिज्ञाएं इससे जुड़ी हैं कि हम सबसे पहले स्वयं को भेंट स्वरूप दें।

हमें यह सोचने का कोई अधिकार नहीं है कि हम धन के संबन्ध में परमेश्वर की आज्ञा को पूरा किये बिना हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु परमेश्वर पर भरोसा करें। पुरानी वाचा के अन्तर्गत, परमेश्वर ने अपने लोगों को बताया कि दशवांश न देने के कारण वे श्रापित थे, लेकिन उसने उन्हें आशीष देने की प्रतिज्ञा की यदि वे अपने दशवांश और भेंट को आज्ञाकारिता सहित दें (देखें मला. 3:8-12)।

बाइबल में हमसे प्रतिज्ञा की गई अधिकांश प्रतिज्ञाएं परमेश्वर के प्रति हमारी आज्ञाकारिता पर निर्भर करती हैं। इसी कारण किसी भी चीज़ के लिए परमेश्वर पर विश्वास करने का प्रयास करने से पूर्व, हमें सबसे पहले स्वयं से पूछना चाहिए : ''क्या मैं उस प्रतिज्ञा के साथ जुड़ी अन्य मांगों को पूरा कर रहा हूं?''

एक तीसरी सामान्य गलती

A Third Common Mistake

नये नियम में, यीशु ने एक ऐसी अनिवार्यता अथवा मांग को रखा जो हमारे हर समय प्रार्थना करने और किसी चीज़ को मांगने पर लागू होती है :

> परमेश्वर पर विश्वास रखो। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे कि ''तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़,'' और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे, कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा। इसलिये मैं तुम से कहता हूं कि *जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा।* (मर. 11:22, 24 पर बल दिया गया है)।

जिस अनिवार्यता के बारे में यीशु ने कहा वह प्रार्थना के समय यह विश्वास करने की है कि जो हमने मांगा है उसे पा लिया है। अधिकांश मसीही गलती से अपने विश्वास को इस भरोसे के साथ बढ़ाते हैं कि अपनी प्रार्थना के जवाब को *देखने* पर उन्होंने उसे प्राप्त कर लिया है। वे विश्वास करते हैं कि वे प्राप्त करने *जा* रहे हैं न कि उन्होंने *प्राप्त* कर लिया है।

जब हम परमेश्वर से उसकी हमारे लिए की गई प्रतिज्ञा के बारे में कुछ कहते हैं, तो हमें यह विश्वास करना चाहिए कि *जब हम प्रार्थना करते हैं* तब ही हम जवाब को प्राप्त कर लेते हैं और हमें उसी समय जवाब देने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद करना चाहिए। हमें जवाब को देखने से *पहले* न कि उसको देखने के *बाद* उसे प्राप्त कर लेने का विश्वास करना चाहिए। हमें शुक्रगुज़ारी के साथ अपने निवेदनों को परमेश्वर के सम्मुख लेकर जाना चाहिए, जैसा पौलुस ने लिखा है :

> किसी भी बात की चिन्ता मत करो : परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किये जाएं (फिलि. 4:6)।

जैसा मैंने पहले भी कहा, यदि हमारे मनों में विश्वास है, तो स्वाभाविक रूप से हमारे शब्द और कार्य हमारे विश्वास को व्यक्त कर देंगे। यीशु ने कहा, ''जो मन में भरा है वही मुंह पर आता है'' (मत्ती 12:34)।

कुछ मसीही एक ही चीज़ को बार-बार मांगने की गलती करते हैं, जो प्रगट करता है कि उन्होंने यह विश्वास नहीं किया वे इसे प्राप्त कर चुके हैं। यदि हम यह विश्वास कर लेते हैं कि हमने प्राप्त कर लिया है तो प्रार्थना करते समय उसी निवेदन को दोहराने की ज़रूरत नहीं होती है। एक चीज़ की बार-बार मांग करने से यह संदेह उत्पन्न होता है कि पहली बार जब हमने परमेश्वर से मांगा था तो क्या उसने सुन लिया था।

क्या यीशु ने एक ही निवेदन को एक से अधिक बार नहीं किया था?

Didn't Jesus Make the Same Request More Than Once?

गतसमनी बाग में प्रार्थना करते समय यीशु ने एक ही निवेदन को तीन बार दोहराया था (देखें मत्ती 26:39-44)। परन्तु स्मरण रखें कि वह परमेश्वर की प्रगट की गई इच्छा के अनुसार विश्वास में होकर प्रार्थना नहीं कर रहा था। वास्तव में, उसने क्रूस से बचने के संभावित तरीके के लिए तीन बार प्रार्थना की थी, वह जानता था कि उसका निवेदन परमेश्वर की इच्छा के प्रतिकूल था। इसी कारण उसने एक ही प्रार्थना में तीन बार स्वयं को परमेश्वर की इच्छा पर छोड़ दिया था।

यीशु की उसी प्रार्थना का प्रयोग प्राय: गलत नमूने के रूप में *सभी* प्रार्थनाओं में किया जाता है, जैसे कुछ यह सिखाते हैं कि हमारी प्रार्थना का अन्त इन शब्दों से होना चाहिए, ''यदि यह तेरी इच्छा है'' या ''मेरी नहीं बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो'' यीशु की प्रार्थना का अनुसरण करते हुए।

पुन:, हमें स्मरण रखना चाहिए कि यीशु एक ऐसे निवेदन को रख रहा था जिसके

बारे में वह जानता था कि वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं है। उसके उदाहरण के नेतृत्व में परमेश्वर की इच्छा में होकर जब हम प्रार्थना करते हैं तो यह गलती होगी और यह विश्वास की कमी को भी प्रगट करेगा। उदाहरणस्वरूप, प्रार्थना, ''परमेश्वर मैं तेरे सम्मुख अपने पापों का अंगीकार करता हूं, और यदि तेरी इच्छा में हो तो मैं तुझसे मुझे क्षमा करने को कहता हूं'', जो यह प्रगट करेगा कि परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि मेरे पापों को क्षमा करे। बेशक, हम जानते हैं कि बाइबल प्रतिज्ञा करती है कि जब हम अपने पापों का अंगीकार करते हैं तो परमेश्वर हमें क्षमा करता है (देखें 1 यूह. 1:9)। अत: इस तरह की प्रार्थना परमेश्वर की प्रगट की गई इच्छा में एक व्यक्ति के विश्वास की कमी को प्रगट करेगी।

यीशु ने प्रत्येक प्रार्थना का अन्त इन शब्दों के साथ नहीं किया, ''मेरी नहीं बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो।'' उसके इस तरह से प्रार्थना किये जाने का केवल एक ही उदाहरण है, जब वह स्वयं को परमेश्वर की इच्छा पर सौंप रहा था, इसके कारण दुखों को झेलने के बारे में जानते हुए।

दूसरी ओर, यदि हम विशिष्ट स्थिति में परमेश्वर की इच्छा को नहीं जानते हैं, क्योंकि उसने इसे प्रगट नहीं किया है, तो इन शब्दों के साथ प्रार्थना का अन्त करना अच्छा होगा, ''यदि यह तेरी इच्छा में है।'' याकूब ने लिखा,

> तुम जो यह कहते हो, कि ''आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और व्यापार करके लाभ उठाएंगे।'' और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा। सुन तो लो तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानो भाप समान हो जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है। इसके विपरीत तुम्हें यह कहना चाहिए, कि ''यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी करेंगे।'' पर अब तुम अपनी डींग पर घमण्ड करते हो; ऐसा सब घमण्ड बुरा होता है (याकू. 4:13-16)।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा के आधार पर अपने निवेदनों को रखने और सारी अनिवार्यताओं को पूरा करने के पश्चात् हमें क्या करना चाहिए? हमें उस समय तक परमेश्वर को उस जवाब के लिए लगातार धन्यवाद देना चाहिए जिसके बारे में हमने उसे प्राप्त करने का विश्वास किया जब तक कि वह पूरा न हो जाए। विश्वास और धीरज रखने के द्वारा ही हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के वारिस होंगे (इब्रा. 6:12)। शैतान संदेहों को भेजने के द्वारा निश्चय ही हमें परास्त करने का प्रयास करेगा, और हमें यह जानना चाहिए कि हमारा मस्तिष्क युद्ध का मैदान है। जब संदेह के विचार हमारे मन-मस्तिष्क पर प्रहार करते हैं, तो हमें केवल उनके स्थान पर परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर आधारित विचारों को रखते हुए विश्वास में होकर परमेश्वर के वचन को बोलना है। हमारे ऐसा करने पर शैतान भाग जाएगा (देखें याकू. 4:7; 1 पत. 5:8-9)।

कार्य में विश्वास का एक उदाहरण

An Example of Faith in Action

बाइबल में विश्वास का एक उत्कृष्ठ उदाहरण पतरस के पानी पर चलने की कहानी है। आइये कहानी को पढ़े और देखें कि हम इससे क्या सीख सकते हैं।

> और उसने (यीशु ने) तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया कि वे उस से पहले पार जाएं, जब तक कि वह लोगों को विदा करे। वह लोगों को विदा करके, प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चढ़ गया; और सांझ को वहां अकेला था। उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा सामने की थी। और वह रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उनके पास आया। चेले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए। और कहने लगे, ''वह भूत है'', और डर के मारे चिल्ला उठे। यीशु ने तुरन्त उन से बातें कीं और कहा, ''ढाढ़स बान्धो; मैं हूं; डरो मत।'' पतरस ने उसको उत्तर दिया, ''हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।'' उसने कहा, ''आ''; तब पतरस नाव से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। पर हवा को देखकर डर गया, और जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहा, ''हे प्रभु, मुझे बचा।'' यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उससे कहा, ''हे अल्प विश्वासी तू ने क्यों संदेह किया?'' जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई। इस पर जो नाव पर थे, उन्होंने उसे दण्डवत् करके कहा, ''सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है'' (मत्ती 14:22-33)।

यह महत्वपूर्ण है कि यीशु के अनुयायी कुछ समय पहले ही गलील की झील में आए भयंकर तूफान में फंसे थे (देखें मत्ती 8:23-27)। उस घटना के समय में, यीशु उनके साथ था, और अपनी डांट से तूफान को शांत करने के पश्चात् उसने अपने शिष्यों को विश्वास की कमी के लिये झिड़का था। उनके यात्रा पर जाने से पहले यीशु ने उनसे कहा था कि यह उसकी इच्छा है कि वे झील के दूसरी ओर जाएं (देखें मर. 4:35)। तौभी, तूफान के आने पर वे अपनी परिस्थितियों में फंसकर यह विश्वास करने लगे थे कि वे मर जाएंगे। यीशु ने उनसे न डरने की आशा की थी।

इस बार यीशु ने उन्हें अकेले गलील के दूसरी ओर भेजा था। निश्चय ही उसने ऐसा आत्मा के नेतृत्व में किया था, और निश्चय ही परमेश्वर जानता था कि उस रात एक प्रतिकूल हवा चलेगी। इसलिए परमेश्वर ने ऐसा होने दिया कि वे अपने विश्वास का एक छोटी चुनौती के द्वारा सामना करें उन प्रतिकूल हवाओं के कारण, जो सारी रात में केवल कुछ घंटों के लिए ही होंगी। शिष्यों की सहनशीलता के लिए हमें उन्हें

श्रेय देना चाहिए, लेकिन हैरानी होती है कि उनमें से किसी ने भी लहरों को शांत होने के लिए नहीं कहा, जैसा उन्होंने यीशु को कुछ दिन पहले ही करते देखा था। रोचक है, मरकुस का सुसमाचार बताता है कि जब यीशु पानी पर चलते हुए उनकी ओर आया, वह ''उनसे आगे निकल जाना चाहता था'' (मर. 6:48)। वह उन्हें उनकी समस्या में छोड़कर आगे निकल जाना चाहता था। ऐसा लगता है कि वे न तो प्रार्थना कर रहे थे और न ही परमेश्वर की ओर देख रहे थे। मुझे हैरानी होती है कि कितनी ही बार आश्चर्यकर्म करनेवाला हमारे पास से होकर जाता है जबकि हम जीवन की कठिनाइयों की हवाओं के तनाव में होते हैं।

विश्वास के सिद्धान्त
Principles of Faith

यीशु ने पतरस की चुनौती का जवाब एकमात्र शब्द से दिया : ''आ!'' यदि पतरस ने इस शब्द को कहने से पहले पानी पर चलने का प्रयास किया होता, तो वह उसी समय डूब गया होता, क्योंकि तब उसके पास अपने विश्वास के आधार के रूप में कोई प्रतिज्ञा नहीं होती। वह विश्वास के विपरीत अपने अनुमान से आगे कदम बढ़ाता। इसी तरह से यीशु के शब्द बोलने के *पश्चात्* यदि किसी और शिष्य ने पानी पर चलने का प्रयास किया होता, तब वह भी डूब गया होता, क्योंकि यीशु ने अपनी प्रतिज्ञा केवल पतरस को ही दी थी। उनमें से कोई भी उस प्रतिज्ञा की अनिवार्यता को पूरा नहीं कर सकता था, क्योकि उनमें से कोई भी पतरस नहीं था। इसी तरह से परमेश्वर की किसी भी प्रतिज्ञा पर अपने लिए भरोसा करने से पूर्व, हमें निश्चित कर लेना चाहिए कि वह प्रतिज्ञा हम पर लागू होती है और यह कि हम उस अनिवार्यता को पूरा कर रहे हैं।

पतरस ने पानी की ओर कदम बढ़ाया। यह वह समय था जब उसने भरोसा किया, यद्यपि इसमें संदेह नहीं कि जो कुछ सैकेण्ड पहले भूत के भय से चिल्ला रहा था पानी पर पहला कदम बढ़ाने पर भी उसके मस्तिष्क में अब भी संदेह थे। लेकिन परमेश्वर को प्राप्त करने के लिए उसे अपने विश्वास पर कार्य करना था। यदि वह नाव पर से ही अपने पांव को पानी में डुबाकर देखता कि वह उसके भार को झेल पाएगा या नहीं, तो वह कभी भी चमत्कार का अनुभव प्राप्त नहीं कर पाता। इसी प्रकार, किसी भी चमत्कार को प्राप्त करने से पूर्व, हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर भरोसा करते हुए स्वयं को परमेश्वर की अधीनता में लाना चाहिए और उसके बाद अपने विश्वास पर कार्य करना चाहिए। हमेशा ऐसे समय आते हैं जब हमारे विश्वास को परखा जाता है। कई बार यह समय बहुत छोटा होता है और कई बार यह बड़ा होता है। लेकिन कुछ समय ऐसे होते हैं जब हमें अपनी इन्द्रियों की साक्षी को छोड़कर परमेश्वर के वचन पर कार्य करना होता है।

पतरस पहले तो अच्छी तरह से चला। लेकिन जब उसने उस कार्य की असंभावना पर विचार किया जो वह कर रहा था, हवा और लहरों की ओर ध्यान देते हुए, वह डर गया। शायद उसने चलना बंद कर दिया था। वह अगला कदम लेने से डर रहा था। और वह, जिसने चमत्कार का अनुभव किया था, उसने स्वयं को डूबते पाया। हमें विश्वास में एक बार आरम्भ करने के पश्चात् उसमें लगातार बने रहना चाहिए, अपने विश्वास पर लगातार कार्य करते हुए। दबाव देना जारी रखें।

संदेह करने के कारण पतरस डूबा था। लोग प्राय: अपने विश्वास की कमी के लिए स्वयं को दोष नहीं देते हैं। इसके विपरीत वे परमेश्वर पर दोष लगाते हैं। लेकिन यदि यीशु पतरस को नाव पर सुरक्षित पहुंचने पर अन्य शिष्यों से, यह कहते सुनता तो आपके विचार से उसकी क्या प्रतिक्रिया होती; ''यह परमेश्वर की इच्छा में था कि मैं यीशु की ओर कुछ कदम ही चल पाता?''

भयभीत होने और अपने विश्वास को खोने के कारण पतरस असफल हों गया था। यीशु ने उसकी आलोचना नहीं की, लेकिन उसने एकदम अपने हाथ उसकी ओर फैला दिये कि वह किसी मज़बूत चीज़ को पकड़ सके। उसने उसी समय पतरस से प्रश्न किया कि उसने संदेह क्यों किया। पतरस के पास संदेह करने का कोई अच्छा कारण नहीं था, क्योंकि परमेश्वर के पुत्र के वचन से निश्चित चीज़ और कोई नहीं हो सकती। *हममें से किसी के पास परमेश्वर के वचन पर संदेह करने, डरने या चिन्तित होने का कोई अच्छा कारण नहीं होता।*

पवित्रशास्त्र उन विजयों से भरपूर है जो विश्वास करने का परिणाम थीं और उन असफलताओं से भी भरा है जो संदेहों का परिणाम थीं। यहोशू और कालेब अपने विश्वास के कारण प्रतिज्ञा की भूमि में जा सके थे जबकि उनके अधिकांश पूर्वज अपने संदेहों के कारण जंगल में मारे गए थे (देखें गिन. 14:26-30)। जिस समय यीशु के शिष्यों को दो-दो करके सुसमाचार प्रचार के लिए भेजा गया था, तब भी उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हुई थी (देखें मत्ती 17:19-20)। बहुतों ने मसीह की सेवकाई में चंगाई को पाया था जबकि उसके गृहनगर नासरत में बहुत से बीमार अपने अविश्वास के कारण रोग की अवस्था में ही रहे (देखें मर. 6:5-6)।

इन सभी के समान, मैंने भी अपने विश्वास और संदेह के अनुसार सफलता और असफलता का अनुभव पाया है। लेकिन अपनी असफलताओं के कारण मैं स्वयं में कड़वाहट उत्पन्न न करके दोष और आलोचना करते हुए स्वयं को सही दिखाने नहीं जा रहा हूं। मैं कुछ जटिल थियोलोजिकल व्याख्याओं को ढूंढने नहीं जा रहा हूं जो परमेश्वर की मेरे लिए इच्छा की पुन: खोज कर सकें। मैं जानता हूं कि परमेश्वर के लिए झूठ बोलना असंभव है। इसलिए असफल होने पर मैं केवल अपने अविश्वास के लिए पश्चात्ताप करता हूं और एक बार फिर से पानी पर चलना आरम्भ करता

हूं। मैंने ध्यान दिया है कि यीशु ने हमेशा मुझे क्षमा दिया है और मुझे डूबने से भी बचाया है!

निर्णय को निर्धारित कर लिया गया है : विश्वासी आशीष पाते हैं; संदेह करने वाले नहीं! शिष्य निर्माता सेवक यीशु के उदाहरण का अनुसरण करता है। वह स्वयं विश्वास से भरा होता है, और वह अपने शिष्यों से भी कहता है, ''परमेश्वर पर विश्वास रखो'' (मर. 11:22)।